गुप्त कलीसिया–9

मसीह की देह

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 2

पुराने नियम की प्रजा को दूर रहने का आदेश था परन्तु नये नियम की कलीसिया को निकट आने का आग्रह है। यहां वार्षिक प्रायश्चित दिवस नहीं है क्योंकि मसीह की मृत्यु में सबका बलिदान है। महापवित्रस्थान में आने का हियाव इसलिए नहीं कि आप भले मनुष्य हैं या आराधना में जाते हैं या प्रार्थना करते हैं परन्तु इसलिए कि यीशु का लहू वहां है। इब्रानियों 10:10, "उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"

इब्रानियों 9:24, "क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में, जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के साम्मने दिखाई दे।"

महायाजक परमपवित्रस्थान में प्रवेश करता है और लहू एक निष्पाप मनुष्य का है। इब्रानियों 9:13–14, "क्योंकि जब बकरों और बैलों का लहू और कलोर की राख का अपवित्र लोगों पर छिड़का जाना शरीर की शुद्धता के लिये उन्हें पवित्र करता है, तो मसीह का लहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।"

उसका लहू अनन्त वाचा का लहू है जिसका प्रभाव पापमुक्ति है। एक बार ही सदा की बलि।

इब्रानियों 10:11–14, "हर एक याजक तो खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते, बार–बार चढ़ाता है। परन्तु यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, और उसी समय से इसकी बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें। क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।"

इब्रानियों 10 में परमेश्वर कहता है कि प्रभु यीशु के कारण वह हमारे पापों को कभी स्मरण नहीं करेगा। आपके वे सब कर्म जिन्हें आप मनुष्यों से छिपाते हैं, परमेश्वर जानता है। वह आपके मन के विचार भी जानता है। इब्रानियों 10 में लिखा है कि हमारे अपराध क्षमा हुए और हमारा विवेक शुद्ध है।

इस संदर्भ में मैं आपको एक घटना सुनाना चाहता हूं। किसी धनवान मनुष्य ने रोल्स रोयस् खरीदी जिसका दावा था कि वह कभी खराब नहीं होती परन्तु हुआ यह कि जब वह व्यक्ति फ्रांस में था तब उसकी कार खराब हो गई उसने कंपनी से संपर्क किया तो कंपनी ने तुरन्त मिस्त्री भेज कर कार सुधरवाई। बहुत समय बीत जाने के बाद उसे ध्यान आया कि रोल्स रोयस् कंपनी ने उसे बिल अभी तक नहीं भेजा है। अतः उसने कंपनी को लिखा कि उन्होंने उसकी कार सुधारने का व्यय नहीं बताया है। कंपनी का उत्तर आया, "श्रीमान जी, क्षमा करना, हमारे पास आपकी कार का कोई लेखा नहीं है।"

परमेश्वर आपके लिए भी यही कहता है, "मेरे पास तुम्हारे पापों को कोई लेखा नहीं है।" हमें परमेश्वर के निकट आने की स्वतंत्रता ही नहीं है वहां हमारा एक सहायक भी है। यीशु सदाकालीन राजा है जो हम पर सदा का शासन करता है। सुनें इब्रानियों 7:25, "इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।"

आपका उद्धारकर्ता वहां है जिसका काम अभी समाप्त नहीं हुआ है। निःसन्देह आपके पाप का दण्ड चुकाने के लिए उसने सब कुछ कर दिया है परन्तु वह अब भी परमेश्वर की दाहिनी ओर उपस्थित आपके लिए जो नई वाचा के भागी हैं विनती करता जाता है। हम नये समुदाय के सदस्य हैं।

इब्रानियों 10:22–25, "तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं। आओ हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है; और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें, और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों–त्यों और भी अधिक यह किया करो।"

इब्रानियों का लेखक कहता है, "इस तथ्य के प्रकाश में निकट आकर स्थिर रहो।" इब्रानियों 10:24 पर विशेष ध्यान दें कि एक दूसरे को भले कामों और प्रेम में कैसे उत्प्रेरित करें। हम विश्वास में एक जुट

परमेश्वर के निकट आते हैं– विश्वास के साथ, सत्यनिष्ठा में आश्वस्त। हमारा मन और देह शुद्ध हैं, "देह को शुद्ध जल से धुलवाकर..."

कलीसिया परमेश्वर के निकट आती है। हम एकजुट आशा रखकर परमेश्वर को थाम लेते हैं। हम अपनी आशा को दृढ़ता से थामे रखते हैं। आशा के बाधकों पर ध्यान दें। ये बाधाएं प्रथम शताब्दी में नहीं 21वीं शताब्दी में भी आती हैं। पहला, सताव! उस समय मसीह का अनुयायी होना आसान नहीं था और विशेष करके एक यहूदी के लिए

परीक्षाएं। इब्रानियों 10:32–34, "परन्तु उन पिछले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दुःखों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे। कभी–कभी तो यों कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कभी यों कि तुम उनके साझी हुए जिनकी दुर्दशा की जाती थीं। क्योंकि तुम कैदियों के दुःख में भी दुःखी हुए, और अपनी संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी; यह जानकर कि तुम्हारे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली संपत्ति है।"

उन्हें कारावास में डाल कर उनका घर लूटा जाता था। उनका जीवन आसान नहीं था। तो उसकी आशा का आधार क्या था? उनकी आशा थी, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्यता।

इब्रानियों 6:13–20, "परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा करते समय जब शपथ खाने के लिये किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा, "मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूंगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊंगा।" और इस रीति से उसने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की। मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं, और उनके हर एक विवाद का फैसला शपथ से पक्का होता है। इसलिये जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रगट करना चाहा कि उसका उद्देश्य अल नहीं सकता, तो शपथ को बीच में लाया। ताकि दो बे–बदल बातों के द्वारा, जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अन्होना है, दृढ़ता से हमारा ढाढ़स बंध जाए, जो शरण लेने को इसलिये दौड़े है कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें। वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुंचता है, जहां यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिये अगुआ के रूप में प्रवेश किया है।"

प्रतिज्ञाओं के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और कलीसिया के लिए प्रभु यीशु का पुनःआगमन। इब्रानियों 9:27–28, "और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है, वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ; और जो लोग उसकी बाट जोहते हैं उनके उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए दिखाई देगा।"

इब्रानियों 10:35–39, "इसलिये अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है। क्योंकि तुम्हें धीरज धरना आवश्यक है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ। "क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है, जब कि आनेवाला आएगा और देर न करेगा। पर मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उस से प्रसन्न न होगा।" पर हम हटनेवाले नहीं कि नाश हो जाएं पर विश्वास करनेवाले हैं कि प्राणों को बचाएं।"

इसका सत्य है, हम कौन हैं?

विश्वास में परमेश्वर के निकट आनेवाले। हम विश्वास के साथ परमेश्वर को थामते हैं। हम एक दूसरे को प्रेम के लिए प्रेरित करते हैं। इफिसियों 5:19–21, "और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने–अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।"

एक दूसरे के साथ नियमित सहभागिता करते हैं। हम एक दूसरे को सदैव प्रोत्साहित करते रहते हैं। मनन करें कि हम एक दूसरे को कैसे मसीह के लिए उकसाएंगे? यह कलीसिया का काम है।

इस संसार में सेवा करके उसका महिमान्वन करना...

हम मसीह में विश्वास द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से बुलाए गए कि इस संसार में सेवा द्वारा उसका महिमान्वन करें। हम मसीह के सामर्थ्य से पूर्ण हैं। इफिसियों 1 अति अद्‌भुत अध्याय है।

इफिसियों 1:15–23, "इस कारण, मैं भी उस विश्वास का समाचार सुनकर जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और सब पवित्र लोगों पर प्रगट है, तुम्हारे लिये धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें

स्मरण किया करता हूं कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश का आत्मा दे, और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है, और उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह के विषय में किया कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया; और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।"

इसकी पराकाष्ठा पद 22–23 में है, "और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।"

मसीह के हाथ में संपूर्ण अधिकार है। कुलुस्सियों 1:19, "क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे।"

1 कुरिन्थियों 15:3–5, "इसी कारण मैं ने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा, और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया।"

वह पुनर्जीवित उद्धारकर्ता है, पौलुस यही कहता है। वह महामहिम राजा है। इब्रानियों 1:4, "और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।"

वह परमप्रधान शासक है जिसके समक्ष हर एक घुटना झुकेगा और प्रत्येक जीभ कहेगी कि वह प्रभु है। मसीह का अधिकार सर्वस्व है। ध्यान दें, कलीसिया में मसीह की परिपूर्णता है। कुलुस्सियों 2:9–10, "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है, और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।"

अब मसीह के सर्वोपरि अधिकार और कलीसिया में मसीह की परिपूर्णता को संयोजित करें। इसका अर्थ है कि संपूर्ण पृथ्वी पर संपूर्ण अधिकार प्रभु यीशु मसीह का ही है। यह सच ही है। 1 कुरिन्थियों 3:22–23 में वह कहता है, "... सब कुछ तुम्हारा है, और तुम मसीह के हो और मसीह परमेश्वर का है।" इफिसियों 2:6 में वह कहता है कि हम उसके साथ स्वार्गिक स्थानों में बैठे हैं। अति महान वचन! परमेश्वर ने मसीह की परिपूर्णता हमें सौंपी है। संसार में कलीसिया शक्तिहीन नहीं है। हमारे पास मसीह का अधिकार है। अतः हम भीरू न बनें।

साहसी बनो, मसीह की महिमा प्रकट करो। मत्ती 28:18–20, "यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।"

यीशु कहता है, "जाओ, और शिष्य बनाओ।" क्यों? "क्योंकि मुझे स्वर्ग और पृथ्वी का पूरा अधिकार प्राप्त है और मैं ने तुम्हें यह अधिकार दिया है।"

परमेश्वर की योजना यह है कि उसके पुत्र की देह के माध्यम से संपूर्ण सृष्टि में उसके पुत्र की महिमा प्रकट करें।

इफिसियों 3:10, "ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रगट किया जाए।"

इसे मन में बैठा लें। और शासकों तथा अधिकारियों का चित्रण देखें– इफिसियों 6:12, "क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।"

यहां शासको, अधिकारों, शक्तियों, अन्धकार, दुष्टता की बुरी शक्तियों का उल्लेख किया गया है। परमेश्वर स्वर्गदूतों और नरक की दुष्टात्माओं से कह रहा है, "क्या तुम मेरी महिमा देखना चाहते हो? मैं पाप में पड़े शैतान के बन्दी इन स्त्री–पुरुष को कुण्ड से निकालकर ऊंचा उठाऊंगा और अपना अनुग्रह उन्हें प्रदान करके अपनी परिपूर्णता से भर दूंगा और स्वर्गदूतों तथा नरक की दुष्टात्माओं को अपनी महानता कलीसिया

में दिखाऊंगा।" परमेश्वर कहता है, "कलीसिया को देखो तो मेरा पुत्र दिखाई देगा।" मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से संसार में सेवा करके उसकी महिमा के निमित्त बुलाए गए मनुष्य।

कलीसिया का वर्णन

हमने कलीसिया की परिभाषा देखी है और अब हम इसका वर्णन देखेंगे। बाइबल कभी कभी कलीसिया के विषय एक बात कहती है तो दूसरे समय सर्वथा एक भिन्न बात कहती है।

कलीसिया वैश्विक है साथ ही स्थानीय है।

हम कलीसिया को घर में आराधना करते देखते हैं। रोमियों 16:5, "उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उनके घर में है। मेरे प्रिय इपैनितुस को, जो मसीह के लिये आसिया का पहला फल है, नमस्कार।"

1 कुरिन्थियों 16:19, "आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिस्का का और उनके घर की कलीसिया को भी तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार!"

नगरों की कलीसिया

1 कुरिन्थियों 16:19, "आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिस्का का और उनके घर की कलीसिया को भी तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार!"

वैश्विक कलीसिया

इफिसियों 5:25, "हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखा, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया।"

1 कुरिन्थियों 12:28, "और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं: प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ्य के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रबन्ध करनेवाले, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले।"

नये नियम में कलीसिया मुख्यतः स्थानीय कलीसिया है। नये निमय में कलीसिया के 114 संदर्भों में से 90 विश्वासियों के स्थानीय समूह की चर्चा करते हैं। स्थानीय कलीसिया मसीह की वैश्विक देह का स्पष्ट रूप है।

अतः कलीसिया वैश्विक तो है परन्तु स्थानीय भी है।

कलीसिया प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों हैं।

अप्रत्यक्ष कलीसिया से मेरा अभिप्राय है कि कलीसिया का परमेश्वर का स्वार्गिक दृष्टिकोण 1 तीमुथियुस 2 में पौलुस कहता है, "परमेश्वर अपनों को जानता है।" इसका संदर्भ सब विश्वासियों से है। प्रत्यक्ष कलीसिया वह है जिसे हम यहां देखते हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 1:1, "पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है।"

परन्तु प्रत्यक्ष कलीसिया में झूठे विश्वासी भी हैं। इसकी चेतावनी पौलुस ने दी है। प्रेरितों के काम 20:29–30, "मैं जानता हूं कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे–ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी–मेढ़ी बातें कहेंगे।"

2 तीमुथियुस 2:17–18, "और उनका वचन सड़े घाव की तरह फैलता जाएगा। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं, जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं।"

सन्त अगस्टीन का कहना था, "अनेक भेड़ें बाहर हैं और अनेक भेड़िये भीतर हैं।"

कलीसिया में नये नियम और पुराने नियम दोनों के विश्वासी हैं।

यहां मतभेद हो सकता है परन्तु हमारी परिभाषा के आधार पर पुराने और नये नियम दोनों के पवित्र जन आते हैं– मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से संसार में सेवा द्वारा परमेश्वर की महिमा के निमित्त बुलाए गए मनुष्य।

हम पुराने नियम की सभाओं का संदर्भ नये नियम में देखते हैं और पुराने नियम के विश्वास का उदाहरण भी दिया गया है।

व्यवस्थाविवरण 4:10, "विशेष करके उस दिन की बातें जिसमें तुम होरेब के पास अपने परमेश्वर यहोवा के सामने खड़े थे, जब यहोवा ने मुझ से कहा था, 'उन लोगों को मेरे पास इकट्ठा कर कि मैं उन्हें अपने वचन सुनाऊं, जिस से वे सीखें, ताकि जितने दिन वे पृथ्वी पर जीवित रहें उतने दिन मेरा भय मानते रहें, और अपने बाल–बच्चों को भी यही सिखाएं।"

प्रेरितों के काम 7:38, "यह वही है, जिसने जंगल में कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें कीं और हमारे बापदादों के साथ था, उसी को जीवित वचन मिले कि हम तक पहुंचाए।"

अब आप पूछेंगे, क्या पुराने नियम के पवित्र जन प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते थे? इब्रानियों 11:26 में लिखा है कि मूसा ने मसीह के कष्टों को मिस्र के धन से बड़ा समझा था। यहां मूसा की तुलना प्रभु यीशु से की गई है।

इब्रानियों अध्याय 11 और 12 में पुराने नियम के भक्तों का उल्लेख है जो बाट जोह रहे थे।

इब्रानियों 11:39–40, "विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तोभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचे।"

इब्रानियों 12:1, "इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें।"

इब्रानियों 12:22–24, "पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, के पास और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं, और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु और छिड़काव के उस लहू के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है।"

यहां अन्तर यह है कि पुराने नियम के भक्त मसीह के आगमन में विश्वास करते थे। वे हमारे तुल्य तो नहीं समझ पाए परन्तु उत्पत्ति 3:15 में दी गई प्रतिज्ञा की पूर्ति की बाट जोह रहे थे। नये नियम के विश्वासी क्रूसित मसीह में विश्वास करते हैं और पूर्वकालीन क्रूस को देखते हैं। वे आनेवाले क्रूस को देखते थे तो हम **विगत** क्रूस को देखते हैं।

पुराने नियम और नये नियम के भक्तों में जाति का अन्तर है। वे यहूदी थे। नये नियम में, पत्रियों में यहूदियों और अन्यजातियों का कलीसिया में एक होना दर्शाया गया है।

पुराने नियम के भक्तों की अपनी सरकार थी जो परमेश्वर के नियमों पर आधारित थी। परमेश्वर उनका शासक था। नये नियम के भक्त विभिन्न शासकों के अधीन हैं।

पुराने नियम में पुरुषों का खतना था और नये नियम में विश्वासियों का बपतिस्मा है तथापि इनमें समानता है जिसकी हम चर्चा करेंगे।

कलीसिया में यहूदी और अन्यजाति दोनों हैं।

यह सुसमाचार है। यहूदियों और अन्यजातियों का एक साथ आना मसीह का भेद है।

इफिसियों 2:14–20, "क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया, और अपने शरीर में बैर अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न कर के मेल करा दे, और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। उसने आकर तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेलमिलाप का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उसी के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पंहुच होती है। इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र

लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो।"

कलीसिया एक है अनेक हैं।

यूहन्ना 17:21–23, "कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है। वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं, मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।"

1 कुरिन्थियों 1:2, "परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम की प्रार्थना करते हैं।"

हमने देखा है कि हम कलीसिया की एकता के निमित्त कार्य करते हैं।

फिलिप्पियों 2:2, "तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो, और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो।"

प्रभु यीशु ने इस एकता के लिए प्रार्थना की और संपूर्ण नये नियम में इसकी कामना की गई है। पौलुस की वाणी में पीड़ा पर ध्यान दें। 1 कुरिन्थियों 1:10, "हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।"

विभाजन भयानक बात है।

पौलुस चेतावनी देता है, विभाजन करनेवालों से सावधान!

रोमियों 16:17–18, "अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते है; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे–सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।"

यहूदा कहता है उनमें पवित्र आत्मा का वास नहीं –पद 19

विभाजन भयानक ही नहीं, घातक है।

गलातियों 5:19–21, "शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्त्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और–और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम को पहले से कह देता हूं जैसा पहले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।"

हम सत्य के लिए खड़े होते हैंः यदि कलीसिया में भ्रम फैलाया जाए तो हमें उसका विरोध करना है परन्तु विभाजन अधिक हानिकारक है, घातक है। अतः हमें कलीसिया में स्थानीय और वैश्विक एकता का प्रयास करना है।

इफिसियों 4:4–6, "एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है।"

कलीसिया और परमेश्वर का इस्राएल...

पौलुस कहता है, "परमेश्वर के इस्राएल पर..."

गलातियों 6:16, "जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर शान्ति और दया होती रहे।"

रोमियों 2 में पौलुस कहता है क यहूदी बाहरी दिखावे से नहीं मन के विश्वास से यहूदी थे। रोमियों 2:28–29, "क्योंकि यहूदी वह नहीं जो प्रगट में यहूदी है; और न वह खतना है जो प्रगट में है और देह में है। पर यहूदी वही है जो मन में है; और खतना वही है जो हृदय का और आत्मा में है, न कि लेख काः ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।"

मैं चाहता हूं कि आप देखें कि कलीसिया कितनी बार इस्राएल से संबन्धित की गई है। हम इस्राएल के पिता अब्राहम के वंशज हैं।

रोमियों 4:11–12, "उसने खतने का चिन्ह पाया कि उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप हो जाए जो उसने बिना खतने की दशा में रखा था, जिससे वह उन सब का पिता ठहरे जो बिना खतने की दशा में विश्वास करते हैं ताकि वे भी धर्मी ठहरें; और उन खतना किए हुओं का पिता हो, जो न केवल खतना किए हुए हैं, परन्तु हमारे पिता अब्राहम के उस विश्वास की लीक पर भी चलते हैं जो उसने बिन खतने की दशा में किया था।"

रोमियों 9:6–8, "परन्तु यह नहीं कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिये कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं; और न अब्राहम के वंश होने के कारण सब उसकी सन्तान ठहरे, परन्तु (लिखा है) "इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा।" अर्थात् शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं।"

रोमियों 9:25, "जैसा वह होशे की पुस्तक में भी कहता है, "जो मेरी प्रजा न थी, उन्हें मैं अपनी प्रजा कहूंगा; और जो प्रिया न थी, उसे प्रिया कहूंगा।"

हम इस्राएल को दी गई प्रतिज्ञाओं के वारिस हैं।

गलातियों 3:29, "और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।"

अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञाएं हमारी भी हैं। रोमियों 4:13–25, "क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली। क्योंकि यदि व्यवस्थावाले वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी। व्यवस्था तो

क्रोध उपजाती है, और जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका उल्लंघन भी नहीं। इसी कारण प्रतिज्ञा विश्वास पर आधारित है कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि वह उसके सब वंशजों के लिये दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्थावाला है वरन् उनके लिये भी जो अब्राहम के समान विश्वासवाले हैं; वही तो हम सब का पिता है, – जैसा लिखा है, "मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है" – उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं। उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो। वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ, और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की; और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है। इस कारण यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया। और यह वचन, "विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिया गया," न केवल उसी के लिये लिखा गया, वरन् हमारे लिये भी जिनके लिये विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।"

हम इस्राएल की प्रतिज्ञाओं के वारिस हैं। हमने यह 1 पतरस 2:4–10 में देखा है। वह इस्राएल के लिए अनेक रूपक काम में लेता है– याजक, बलिदान, जीवित पत्थर, कोने का पत्थर, राजसी याजकगण, पवित्र जाति, परमेश्वर की संपदा आदि।

1 पतरस 2:4–10, "उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहुमूल्य जीवता पत्थर है, तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं। इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है, "देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं: और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।" अतः तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया," और "ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है," क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे। पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में

बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।"

अतः कलीसिया की कहानी इस्राएल से आरंभ होती है जो पुराने नियम में परमेश्वर की प्रजा थे। यद्यपि दोनों में समरूपता नहीं है, इतिहास में समानता है।

कलीसिया और परमेश्वर का राज्य...

क्या कलीसिया परमेश्वर का राज्य है? नहीं। धर्मशास्त्र में कलीसिया और परमेश्वर का राज्य एक नहीं है, जबकि उनमें निकट संबन्ध है।

प्रेरितों के काम 8:12, "परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।"

प्रेरितों के काम 19:8, "वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा।"

प्रेरितों के काम 20:25, "अब देखो, मैं जानता हूं कि तुम सब जिनमे मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुंह फिर न देखोगे।"

प्रेरितों के काम 28:31, "और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक–टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।"

इन पदों में आप राज्य के स्थान पर कलीसिया नहीं लिख सकते। वे परमेश्वर की कलीसिया का सुसमाचार नहीं सुनाते हैं। वे परमेश्वर की कलीसिया के बारे में नहीं समझा रहे थे। उसने यह नहीं कहा, "परमेश्वर की कलीसिया का प्रचार करता फिरा।" अतः हम देखते हैं कि नये नियम में परमेश्वर का राज्य कलीसिया का निर्माण करता है। जब परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया जाता है तब उसके राज्य के अधीन सब जन उसके राज्य में प्रवेश करते हैं और कलीसिया का उदय होता है। मत्ती रचित सुसमाचार में हर जगह यह प्रकट है।

मत्ती 5:3, "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"

मत्ती 7:21, "जो मुझ से, 'हे प्रभु, हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

मत्ती 13:40–43, "अतः जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा। मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे, और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे, जहां रोना और दांत पीसना होगा। उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले।"

अतः परमेश्वर का राज्य कलीसिया बनाता है और कलीसिया परमेश्वर के राज्य का प्रचार करती है।

मत्ती 24:14, "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।"

राज्य का सुसमाचार कलीसिया द्वारा प्रसारित किया जाता है।

कलीसिया राज्य का साधन है।

मत्ती 10:8, "बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।"

लूका 10:17, "वे सत्तर आनन्द करते हुए लौटे और कहने लगे, "हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है।"

परमेश्वर का राज्य कलीसिया के माध्यम से आगे बढ़ता है। कलीसिया परमेश्वर के राज्य की अभिरक्षक है। प्रभु यीशु मत्ती 16:19 में पतरस से कहता है, "मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।"

यह चित्रण कलीसिया को परमेश्वर के राज्य का रक्षक बनाने का है।

अन्त में कलीसिया और परमेश्वर के राज्य के दो सत्य।

प्रभु यीशु अपनी कलीसिया के लिए आएगा।

मत्ती 24:30–31, "तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे।"

1 थिस्सलुनीकियों 3:11–13, "अब हमारा परमेश्वर और पिता आप ही और हमारा प्रभु यीशु, तुम्हारे यहां आने के लिये हमारी अगुवाई करे; और प्रभु ऐसा करे कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं, वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में और सब मनुष्यों के साथ बढ़े, और उन्नति करता जाए। ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें।"

राजा अपनी कलीसिया के लिए आएगा और अपने राज्य की स्थापना करेगा।

1 कुरिन्थियों 15:24, "इसके बाद अन्त होगा। उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा।"

उस समय उसका राज्य, उसका शासन सदा सर्वदा का होगा। यह कलीसिया का संक्षिप्त विवरण है। यह विचार करने हेतु कुछ महत्वपूर्ण बाते हैं।

कलीसिया के प्रति समर्पण

क्या कलीसिया की सदस्यता आवश्यक है?

धर्मशास्त्र क्या कहता है कि विश्वासी कलीसिया के प्रति मन लगाएं और क्या हमें स्थानीय कलीसिया से निष्ठा निभाना है या व्यापक कलीसिया में सबके साथ निष्ठावान होना है? अतः एक अत्यधिक साधारण प्रश्न है, क्या कलीसिया की सदस्यता आवश्यक है? किसी ने मुझसे कहा, "कलीसिया की सदस्यता का उल्लेख बाइबल में नहीं है इसलिए मैं किसी कलीसिया विशेष का सदस्य नहीं हूं।" यह सही है कि कलीसिया का सदस्य होने की आज्ञा बाइबल में नहीं है। परन्तु बाइबल में यीशु ने भी नहीं कहा कि वह परमेश्वर है और न ही कहीं परमेश्वर को त्रिएक परमेश्वर कहा गया है।

कलीसिया की सदस्यता बाइबल में केवल समझनेवाली बात है। कलीसिया एक देह हैं और देह के अंग होते हैं। 1 कुरिन्थियों 12:21–26, "आंख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं," और न सिर पांवों से कह सकता है, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं।" परन्तु देह के वे अंग जो दूसरों से निर्बल लगते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं; और देह के जिन अंगो को हम आदर के योग्य नहीं समझते उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं, फिर भी हमारे शोभायमान अंगो को इसकी आवश्यकता नहीं। परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है कि जिस अंग को आदर की घटी थी उसी को और भी बहुत आदर मिले। ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिये यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।"

यह एक आम धारणा है कि हम प्रभु यीशु में विश्वास करनेवाले मसीह की व्यापक देह के सदस्य हैं। क्या धर्मशास्त्र की यही शिक्षा है? आइए हम बाइबल में कलीसियाई सदस्यता के चार निहितार्थ देखें और यह भी कि वे महत्वपूर्ण क्यों हैं?

1. विश्वासियों के इकट्ठे होने से सदस्यता का अर्थ निकलता है।

1 कुरिन्थियों 16:19, "आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिस्का का और उनके घर की कलीसिया को भी तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार!"

नये नियम में कलीसिया के दो चित्रण हैंः मसीह की देह जिसमें विश्वासी हैं और दूसरा, आराधना, परस्पर सेवा, एक दूसरे से प्रेम करनेवालों का समूह।

नये नियम में कलीसिया के 114 संदर्भों में से 90 स्थानीय कलीसिया से संबन्धित हैं। अतः मसीह की व्यापक देह के सदस्य जो स्थानीय समूह में एकत्र होते हैं, जिनसे उनकी पहचान होती है, वह स्थानीय कलीसिया है।

पौलुस जब कुरिन्थ की कलीसिया को पत्र लिखता है तो वह एक निश्चित स्थान में निश्चित कलीसिया को लिखता है। अतः अब एक प्रश्न उठता है, विश्वासी होने के कारण आप किस समूह के साथ सहभागिता करते हैं? यही सदस्यता है और उसी समूह से आपकी पहचान है।

2. कलीसिया के अनुशासन से सदस्यता का अर्थ प्रकट है।

मत्ती 18:15–17, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। यदि वह न सुने, तो एक या दो जन को अपने साथ और ले जा, कि 'हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से निश्चित की जाए।' यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले जैसा जान।"

यहां यीशु कहता है कि यदि कोई अपराध करके न माने तो कलीसिया से कह दिया जाए। यह कलीसिया व्यापक कलीसिया नहीं परन्तु स्थानीय समूह है।

1 कुरिन्थियों 5 में भी कलीसिया के अनुशासन का विषय है– कलीसिया से बहिष्कार।

1 कुरिन्थियों 5:9–13, "मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारियों की संगति न करना। यह नहीं कि तुम बिल्कुल इस जगत के व्यभिचारियों, या लोभियों, या अन्धेर करनेवालों, या मूर्त्तिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। पर मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्त्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करनेवाला हो, तो उसकी संगति मत करना; वरन् ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना। क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करते? परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है। इसलिये उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो।"

अब यहां बहिष्कार के लिए पहले सदस्य होना आवश्यक है। अन्यथा प्रभु यीशु और पौलुस के निर्देशों का पालन कैसे किया जाएगा।

3. कलीसिया की अगुआई से सदस्यता का बोध होता है।

इब्रानियों 3:17, "और वह चालीस वर्ष तक किन लोगों से क्रोधित रहा? क्या उन्हीं से नहीं जिन्होंने पाप किया, और उनके शव जंगल में पड़े रहे?"

अगुवे लेखा देंगे। किसका? जिनकी वे अगुआई करते हैं। मैं पास्टर हूं मैं किसका उत्तरदायी हूं। व्यापक कलीसिया का? नहीं केवल मेरी कलीसिया का। आज्ञा किसे मानना है? सब विश्वासियों को? नहीं। केवल आपकी कलीसिया के सदस्यों को।

प्रेरितों के काम 20:28, "इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।"

1 पतरस 5:2–3, "कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिये नहीं पर मन लगा कर। जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिये आदर्श बनो।"

मैं संसार के सब विश्वासियों का लेखा नहीं दूंगा। मैं केवल मेरी स्थानीय कलीसिया का उत्तरदायी हूं।

कलीसिया की सदस्यता का अन्तिम निहितार्थ कलीसियाई उत्तरदायित्व से प्रकट होता है। परमेश्वर कलीसिया को अगुओं के चुनाव का उत्तरदायी ठहराता है।

प्रेरितों के काम 6:2–6, "तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, "यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने–पिलाने की सेवा में रहें। इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।" यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस, और

प्रखुरुस, और नीकानोर, और तीमोन और परमिनास और अन्ताकियावासी नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया। इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।"

कलीसिया सुसमाचार प्रचार की उत्तरदायी है। गलातियों की पत्री में, यदि कोई सुसमाचार प्रचार न करे तो वह शापित है।

गलातियों 1:6–9, "मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो। जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो।"

कलीसिया सदस्यों की पहचान की उत्तरदायी है।

1 कुरिन्थियों 5:12–13, "क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करते? परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है। इसलिये उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो।"

कलीसिया मिशन सेवकों को भेजने की उत्तरदायी है।

प्रेरितों के काम 13:1–3, "अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; जैसे: बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम, और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है।" तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।"

इन सब संदर्भों को एक साथ रखें तो एब प्रश्न उठता है, क्या आप अपनी स्थानीय कलीसिया के उत्तरदायी सदस्य हैं? आपका जीवन किसे समर्पित है? आप किसके साथ परमेश्वर की आशा थामें हुए हैं?

आपका जीवन किन अगुओं के अधीन है? कौन आपकी आत्मिक उन्नति का उत्तरदायी है। यदि आपके पास इन प्रश्नों का उत्तर नहीं है तो आप नये नियम के नमूने के विपरीत जी रहे हैं। मित्रों, यह अति महत्वपूर्ण है। इन्हीं विभिन्न कारणों और हमारी भलाई तथा अपनी महिमा के लिए परमेश्वर ने स्थानीय कलीसिया बनाई है। अतः स्थानीय कलीसिया को न मानना हमारी इच्छा के अनुसार नहीं है। अतः आपको कलीसिया की सदस्यता का उत्तरदायित्व निभाना अनिवार्य है।

क्या कलीसिया की वाचा का मूल्य है?

कलीसिया की वाचा का भी बाइबल में उल्लेख नहीं है। यदि इसका आदेश नहीं है तो इसका इन्कार भी नहीं है। अतः क्या इसका मूल्य है। वाचा का अर्थ है, किसी काम को करने का लिखित समझौता या प्रतिज्ञा।

कलीसिया की वाचा की यह परिभाषा बाइबल से नहीं है, "कलीसिया की वाचा है, विश्वास के समुदाय में परस्पर प्रेम रखने की अभिव्यक्ति।" संपूर्ण बाइबल में– उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक, स्पष्ट है कि परमेश्वर के जन होने का अर्थ क्या है। यह एक विधान नहीं है परन्तु हम कहते हैं, "हम विभिन्न रूपों में परस्पर प्रेम रखना चाहते हैं।"

मेरे विचार में इसका आधार पुराने नियम में है। यह मूसा, अब्राहम या नये नियम की वाचा तो नहीं परन्तु एक समर्पण है जैसे नहेम्याह ने कहा था।

नहेम्याह 8:1–6, "जब सातवां महीना निकट आया, उस समय सब इस्राएली अपने अपने नगर में थे। तब उन सब लोगों ने एक मन होकर, जलफाटक के सामने के चौक में इकट्ठे होकर, एज्रा शास्त्री से कहा कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले आ। तब एज्रा याजक सातवें महीने के पहले दिन को क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितने सुनकर समझ सकते थे, उन सभों के सामने व्यवस्था को ले आया। वह उसकी बातें भोर से दो पहर तक उस चौक के सामने जो जलफाटक के सामने था, क्या स्त्री, क्या पुरुष और सब समझने वालों को पढ़कर सुनाता रहा; और लोग व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाए रहे। एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर जो इसी काम के लिये बना था, खड़ा हो गया; और उसकी दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्कियाह और मासेयाह; और बाईं ओर, पदायाह, मीशाएल, मल्कियाह, हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए। तब एज्रा ने जो सब लोगों से

ऊंचे पर था, सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उसने उसको खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए। तब एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमीन, आमीन, कहा; और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत् किया।"

इसका अर्थ यह नहीं कि हम परमेश्वर के वचन से टल जाएं। परमेश्वर का वचन तो प्रधान है। वचन ही हमारे समुदाय के पारस्परिक प्रेम का आधार है। कलीसिया परमेश्वर के अनुग्रह से पोषित समुदाय है। नहेम्याह 9 में यह स्पष्ट है। परमेश्वर की आवश्यकता के लिए यह परमेश्वर की प्रजा का अंगीकार है।

नहेम्याह 9:32–33, "अब हे हमारे परमेश्वर! हे महान् पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर! जो अपनी वाचा पालता और करुणा करता रहा है, जो बड़ा कष्ट, अश्शूर के राजाओं के दिनों से ले आज के दिन तक हमें और हमारे राजाओं, हाकिमों, याजकों, नबियों, पुरखाओं वरन् तेरी समस्त प्रजा को भोगना पड़ा है, वह तेरी दृष्टि में थोड़ा न ठहरे। तौभी जो कुछ हम पर बीता है उसके विषय तू तो धर्मी है; तू ने तो सच्चाई से काम किया है, परन्तु हम ने दुष्टता की है।"

कलीसिया पारस्परिक भलाई को बढ़ानेवाला समुदाय है।

नहेम्याह 10:28–30, "शेष लोग अर्थात् याजक, लेवीय, द्वारपाल, गवैये और मन्दिर के सेवक, और जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिये देश देश के लोगों से अलग हुए थे, उन सभों ने अपनी स्त्रियों और उन बेटें–बेटियों समेत जो समझनेवाले थे, अपने भाई रईसों से मिलकर शपथ खाई, कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्था पर चलेंगे जो उसके दास मूसा के द्वारा दी गई है, और अपने प्रभु यहोवा की सब आज्ञाएं, नियम और विधियां मानने में चौकसी करेंगे। हम न तो अपनी बेटियां इस देश के लोगों को ब्याह देंगे, और न अपने बेटों के लिये उनकी बेटियां ब्याह लेंगे।"

उन्होंने परमेश्वर के आज्ञापालन के निमित्त एक दूसरे को प्रोत्साहित करने हेतु वाचा बांधी कि वे एक दूसरे से प्रेम रखेंगे। कलीसिया परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करनेवाला समुदाय है।

नहेम्याह 12:43, "उसी दिन लोगों ने बड़े बड़े मेलबलि चढ़ाए, और आनन्द किया; क्योंकि परमेश्वर ने उनको बहुत ही आनन्दित किया था; स्त्रियों ने और बालबच्चों ने भी आनन्द किया। यरूशलेम के आनन्द की ध्वनि दूर दूर तक फैल गई।"

कलीसिया का सारांश

कलीसिया क्या है? मसीह में विश्वास द्वारा संसार में सेवा द्वारा उसकी महिमा के निमित्त परमेश्वर के अनुग्रह से बुलाए गए मनुष्य। स्थानीय कलीसिया क्या है? स्थानीय कलीसिया एक स्थानीय निवास है जो संसार में उसकी सेवा के निमित्त, उसकी महिमा प्रदर्शन हेतु मसीह में वाचा का समुदाय है। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि स्थानीय कलीसिया होने के लिए आपको कलीसिया की वाचा बांधनी है परन्तु मेरे पास इससे अधिक उत्तम शब्द नहीं हैं कि विश्वासियों की सभा की व्याख्या करूं कि वे एक कलीसिया की पहचान हों। मैं मत्ती 18 का संदर्भ देता हूं, कि जहां दो या तीन एकत्र हों वह कलीसिया है– बहुवचन में विश्वासी– मसीह के अनुयायी परन्तु यह वास्तव में धर्मशास्त्र को विकृत करना है। यह अर्थ से चूकना है। कलीसिया निःसन्देह मसीह के अनुयायियों का समूह है परन्तु चाय पीने के लिए नहीं। कलीसिया एक दूसरे के प्रति समर्पित है, एक दूसरे से प्रेम करती है, एक दूसरे की सुधि लेती है, एक दूसरे को मसीह के लिए प्रेरित करती है और अवश्य सब कामों को एकजुट होकर करती है। वे कलीसिया रूप में पहचाने जाते हैं और परमेश्वर के वचन को अनुरूप व्यवहार करते हैं। यह कलीसिया है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में आप अनेक स्थानीय सभाएं देखते हैं जिनमें मसीह के अनुयायी एकत्र हैं। प्रेरितों के काम और नये नियम की पत्रियों में हम निर्देश पढ़ते हैं कि विश्वासी जब एकत्र हों तब वे एक दूसरे से पहचान बनाएं। एक दूसरे के प्रति समर्पित हों, एक दूसरे के साथ विकास करें और परमेश्वर के दूतकार्य के प्रति समर्पित हों। वे एक साथ आराधना करते हैं। वे एक साथ बपतिस्मा प्राप्त हैं। स्थानीय कलीसिया में यही होता है। वाचा में सहभागी का अर्थ यही है।

अतः विश्वासी और स्थानीय कलीसिया मसीह के अनुयायी कलीसिया का अंश या कलीसिया का भाग होने के कारण स्वयं की भलाई हेतु हम एक दूसरे के प्रति समर्पित होते हैं। यदि आप स्थानीय कलीसिया से अलग मसीही जीवन जी रहे हैं तो आप आत्मिकता में भूखे ही रहेंगे और नये नियम के विपरीत जीवन जीएंगे। यह अच्छा नहीं है। नये नियम में स्थानीय कलीसिया से विलग मसीही विश्वास का उल्लेख नहीं है। परमेश्वर कहता है कि यह प्राथमिकता है। इसमें दो राय नहीं कि स्थानीय कलीसियाएं सिद्ध नहीं है क्योंकि आप पापी हैं और कलीसिया की सदस्यता में एक और जुड़ते हैं परन्तु परमेश्वर अनुग्रहकारी है। यह कलीसिया का चित्रण है। यही कारण है कि यह उसकी महिमा की उद्घोषणा है। केवल परमेश्वर ही है जो इस समुदाय से अच्छाई प्रकट करता है।

अपनी स्वयं की भलाई और अन्य विश्वासियों की भलाई। आपको अन्य विश्वासियों की आवश्यकता है और उन्हें आपकी। वे आपके साथ केवल आराधना में बैठने के लिए नहीं हैं। वे इसलिये हैं कि आप अपने जीवन को उन्हें सौंप दें। अब आप पूछेंगे, "यदि हम केवल कलीसिया के सदस्यों के ही प्रति समर्पित हों तो बाहर के लोगों के विषय आप क्या कहेंगे?" यही तो कलीसिया का वैभव है। हम एक दूसरे के प्रति समर्पित हैं। हम अविश्वासियों की भलाई के लिए कलीसिया के सदस्य हैं क्योंकि कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना है कि एक प्रेमी समुदाय बनाए जिससे कि संसार में सुसमाचार का सार्वजनिक प्रदर्शन हो। यह एक ऐसा समुदाय है जो मसीह द्वारा उत्पन्न अन्तर को प्रकट करता है जिसके कारण मनुष्य मसीह की ओर आकर्षित होता है। यह हमारे पारस्परिक प्रेम के कारण संभव है। संसार अनौपचारिक कलीसिया के सदस्यों को देखकर आकर्षित नहीं होता है। संसार मसीह की ओर आकर्षित तब होता है जब वह देखता है कि कलीसिया के सदस्य प्रेम के कारण एक दूसरे के लिए अपना जीवन देते हैं और एक दूसरे के प्रति ऐसे समर्पित हैं जैसा वे कहीं और नहीं देखते। यह परमेश्वर की योजना है। अतः आप अविश्वासियों की भलाई और परमेश्वर की महिमा के निमित्त ऐसा ही करें।

मैं पूछता, "यदि हम कलीसिया को कुछ भी समर्पित नहीं करते तो हम कलीसिया के लिए अपनी जान देनेवाले की महिमा को कैसे प्रकट करेंगे?" अपनी भलाई और जिन्हें आपकी आवश्यकता है, उनकी भलाई के लिए और उन खोए हुओं की भलाई के लिए जो कलीसिया में मसीह को देखना चाहते हैं तथा परमेश्वर की महिमा के लिए आपको यह करना है।

कलीसिया क्या करती है?
अपने लोगों के लिए परमेश्वर की योजना
कलीसिया की सात गतिविधियां...

कलीसिया क्या करती है? अपने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य। मैं कलीसिया की मूल गतिविधियों की परिभाषा देना चाहता हूं और प्रेरितों के काम 2:38–47 को अपने विवाद का आधार बनाना चाहता हूं। प्रभु यीशु क्रूस पर मरा और फिर जी उठा। प्रेरितों के काम अध्याय 1 में उसके स्वर्गारोहण का उल्लेख किया गया है और अध्याय 2 में, पिन्तेकुस्त के दिन उसने पवित्र आत्मा भेजा। वहां पतरस प्रचार करता है। प्रचार के अन्त में पतरस ने कहा– प्रेरितों के काम 2:38–41, "पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर–दूर के लोगों के लिये भी

है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" उस ने बहुत और बातों में भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ। अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।"

यह नये नियम की कलीसिया का उद्घाटन हैः